ग्रन्थमाला 'बालसंस्कार' : खण्ड ४

बोधकथा

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाके उद्घोषक

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

सद्गुरु (स्व.) डॉ. वसंत बाळाजी आठवले

सनातन संस्था

सनातनके ग्रन्थोंकी भारतकी भाषाओंके अनुसार संख्या

मराठी ३४३, अंग्रेजी २०१, कन्नड १९६, हिन्दी १९५, गुजराती ६८, तेलुगु ४५, तमिल ४३, बांग्ला २९, मलयालम २४, ओडिया २२, पंजाबी १३, नेपाली ३ एवं असमिया २

नवम्बर २०२३ तक ३६४ ग्रन्थोंकी १३ भाषाओंमें ९४ लाख ६७ सहस्र प्रतियां !

ग्रन्थके संकलनकर्ताओंका परिचय

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवलेजीके आध्यात्मिक शोधकार्यका संक्षिप्त परिचय

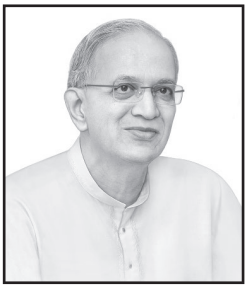

१. 'ईश्वरप्राप्ति हेतु कला' के विषयमें मार्गदर्शन एवं संगीत, नृत्य आदि कलाओं के सात्त्विक प्रस्तुतीकरण सम्बन्धी शोध

२. आचारपालनके कृत्य, धार्मिक कृत्य व बुद्धि-अगम्य घटनाओंका वैज्ञानिक उपकरणोंद्वारा शोध

३. शारीरिक एवं मानसिक तथा अनिष्ट शक्तियोंकी पीडाओंकी उपचार-पद्धतियोंके विषयमें शोध

४. २१.११.२०२३ तक २ बालक-सन्तोंको, तथा ६० प्रतिशतसे अधिक आध्यात्मिक स्तर प्राप्त २२९ और अन्य ९०८ दैवी बालकोंको समाजसे परिचित करवाया । दैवी बालकोंके विषयमें शोध-कार्य भी जारी है ।

५. अपनी (सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीकी) देह तथा उपयोगकी वस्तुओंमें हो रहे दैवी परिवर्तनों सम्बन्धी शोधकार्य और अपने महामृत्युयोग का शोधकार्यकी दृष्टिसे अध्ययन

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीका साधकोंको आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥ - जयंत बाळाजी आठवले
१८.५.१९९६

सद्गुरु डॉ. वसंत बाळाजी आठवले

(एम.डी. (पीडिएट्रिक्स), डी.सी.एच., एफ.ए.एम.एस., वैद्याचार्य)

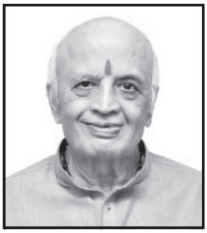

सद्गुरु डॉ. वसंत आठवलेजी 'सनातन संस्था'के २७ वें सन्त हैं । वे प्रख्यात बालरोग-विशेषज्ञ थे । वर्ष १९५९ में उन्होंने मुंबईके 'लोकमान्य टिळक महानगरपालिका रुग्णालय' में बालरुग्ण विभाग आरम्भ किया । २००१ में उन्हें 'आयुर्वेद एण्ड हिपैटिक डिसऑर्डर्स' विषयके अन्तराष्ट्रीय परिसंवाद में 'जीवनगौरव' पुरस्कार, तथा २०१२ में 'इंडियन एकेडमी ऑफ पेडियाट्रीक्स'द्वारा 'जीवनगौरव' पुरस्कार मिला । उन्होंने आयुर्वेदपर १८ एवं अभिभावकोंके लिए मार्गदर्शक ६ ग्रन्थ लिखे हैं ।

वर्ष २००४ में उन्होंने 'सनातन संस्था'के संस्थापक एवं अपने छोटे भाई परात्पर गुरु डॉ. जयंत आठवलेजीका शिष्यत्व स्वीकार किया । १६.१२.२०१२ के दिन तीव्र लगन, जिज्ञासुवृत्ति एवं विनम्रता, इन गुणोंके कारण वे सन्तपदपर विराजमान हुए। ९.११.२०१३ को अर्थात ८० वर्षकी आयुमें उन्होंने देहत्याग किया ।

अनुक्रमणिका

(कुछ विशेषतापूर्ण सूत्र [मुद्दे] '*' चिन्हसे दर्शाए हैं ।)

- **संस्कृत भाषानुरूप हिन्दीके प्रयोग हेतु सनातनका समर्थन** ७
- **सनातनके ग्रंथोंमें प्रयुक्त संस्कृतनिष्ठ हिन्दीकी कारणमीमांसा** ८
- **अभिभावको, 'संस्कार' ग्रन्थमालारूपी भेंट स्वीकार करें ।** ९
- **भूमिका** १०

१. सदाचारका (नैतिक एवं धार्मिक आचरणका) महत्त्व ११

२. आचरण कैसा हो ? १२

३. सकारात्मक दृष्टिकोण कैसा हो ? १३

४. अहंकार न हो ! १४
* महाबली हनुमानद्वारा भीमका गर्वहरण ! १५
* देवताके द्वारपर याचक होकर ही जाना पडता है ! १६
५. सच्चा पश्चाताप १७
६. संगठनका महत्त्व १७
७. मनुष्यके कर्तव्य १८
* आर्थिक १८
* राजनीतिक २०
८. भगवानकी सर्वव्यापकता ! २०
९. साधना २१
१०. हमारे आदर्श २८
* गुरुका महत्त्व ३१
* गुरुका कार्य ३३
* गुरुभक्ति ३४
११. महान हिन्दू संस्कृतिकी रक्षा करें ! ४१
* भारतीय वेशभूषाके प्रति अभिमान रखिए ! ४२
१२. राष्ट्रके प्रति कर्तव्यपालन करनेवालोंको कभी न भूलें ! ४२
* क्रान्तिकारी ४४
* राष्ट्रपुरुष ४५
१३. बच्चो, धर्माभिमानी बनकर धर्मरक्षा करें ! ४९
१४. बच्चो, प्रतिदिन साधना करें ! ५०

बालको, आप खेलकी पत्रिकाएं एवं जादूका घोडा, उडनेवाली परी जैसी कहानियां पढते हैं तथा 'टीवी'पर अनुचित संस्कार करनेवाले 'कार्टून' देखते हैं । इससे आपका मनोरंजन तो होता है; किन्तु आपपर अच्छे संस्कार नहीं होते ! संस्कार होना महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इससे जीवन आदर्श बनता है । प्रस्तुत ग्रन्थमें दी हुई कथाओंसे आपका न केवल मनोरंजन होगा, अपितु सुसंस्कारित जीवन जीनेकी कला भी जानोगे । साथ ही आपको इन कथाओंसे – सदाचार, साधना, धर्मप्रेम, संस्कृतिप्रेम, राष्ट्रभक्ति आदि विषयोंमें उत्तम ज्ञान भी मिलेगा ।

बालको, आप कथाएं पढकर जो अच्छी बातें सीखते हैं, उनके अनुसार प्रतिदिन आचरण भी करें ! क्रान्तिकारियोंने देशको स्वतन्त्र करानेके लिए जो बलिदान दिया है, उसकी कथाएं पढकर आपका देशप्रेम बढकर आपको भी अपने देशके लिए कुछ करना चाहिए, उदा. राष्ट्रध्वजका अनादर रोकना चाहिए । बालक जोरावर सिंह एवं फतेह सिंहने मरना स्वीकार किया; किन्तु अपना धर्म त्यागकर दूसरोंका धर्म स्वीकार नहीं किया । यह कथा पढकर आपका भी धर्माभिमान बढना चाहिए । आपको प्रतिदिन धर्मका आचरण करना चाहिए तथा देवताओंके अनादरका वैधानिक मार्गसे विरोध करना चाहिए ।

बालमित्रो, यह पूरा ग्रन्थ पढनेके पश्चात, आगे प्रत्येक रविवार को अथवा दीपावली एवं ग्रीष्मकालीन छुट्टियोंमें इस ग्रन्थमें छपी कथाओंको पुनः पढें तथा उनपर चिन्तन-मनन करें । सुसंस्कारित जीवन जीनेकी कला भलीभांति समझनेके लिए सनातनके 'संस्कारवर्ग'में जाएं तथा सनातनकी 'बालसंस्कार' ग्रन्थमाला अवश्य पढें ।

'ग्रन्थमें प्रकाशित कथाओंसे बोध लेकर सभी विद्यार्थी राष्ट्रप्रेमी एवं धर्मप्रेमी बनें', यह श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना ! – संकलनकर्ता